ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

11-08-2026

जब अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न वा संकल्प में भी वार न करे तब कहेंगे डबल अहिंसक। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वतः स्मृति स्वरूप में रहे। कभी अपनी सम्पूर्ण सतोप्रधान स्टेज से नीचे गिरकर अपना घात नहीं करना। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति स्वरूप स्थिति से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना, यह भी पाप के खाते में जमा होता है।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

When the vice of impurity doesn't disturb you in your dreams or thoughts, you can then be said to be doubly non-violent. Constantly be aware of brotherhood easily and naturally, that is, be an embodiment of remembrance. Never come down from your complete and satopradhan stage and thereby commit suicide. To come down from your original, virtuous and powerful form of being a soul means to forget, and that would be accumulated in the account of sin.